

उच्च न्यायालय ने 1965 के युद्ध की वधवा को 58 वर्ष बाद पेंशन प्रदान की चर्चा में क्यों?

पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय ने एक ऐतिहासिक नरिणय में [1965 के भारत-पाक युद्ध](#) में शहीद हुए एक सैनिक की 87 वर्षीय वधवा अंगूरी देवी को [पेंशन](#) लाभ प्रदान किया है।

- यह नरिणय न्याय और वित्तीय सहायता के लिये **58 वर्षों के संघर्ष** का अंत है।

मुख्य बट्टि

- अंगूरी देवी के पति नटेर पाल सहि [राजपूत रेजिमेंट में सेवारत थे और 1965 के युद्ध](#) के दौरान पश्चिमी मोर्चे पर एक माइन वसिफोट में शहीद हो गए थे।
 - अपने पति की मृत्यु के बाद उन्हें सेना से वशिष पारिवारिक पेंशन मली।
- 1972 में सरकार ने 1947 से आगे के लिये पूर्वव्यापी प्रभाव से **"उदारीकृत पारिवारिक पेंशन"** नीति शुरू की, जिसके तहत उच्च पेंशन प्रदान की गई।
 - इस नीति में 1 फरवरी, 1972 से वित्तीय प्रभाव और बकाया शामिल थे।
- 1965 में उनके पति की मृत्यु के बावजूद, प्राधिकारियों ने यह पॉलिसी अंगूरी देवी पर लागू नहीं की।
- 31 **जनवरी, 2001** को एक नई नीति शुरू की गई, जिसका वित्तीय प्रभाव 1 **जनवरी, 1996** से माना गया।
- इस नीति में **"उदारीकृत पारिवारिक पेंशन"** शामिल थी, लेकिन यह केवल 1 जनवरी, 1996 के बाद हुई मृत्यु /वकिलांगता पर ही लागू थी।
- बाद में सर्वोच्च न्यायालय ने **1996 की कट-ऑफ तिथि को रद्द कर दिया**।
 - हालाँकि, अंगूरी देवी के दावे को शुरू में **इसलिये अस्वीकार कर दिया गया क्योंकि कट-ऑफ तिथियों में उनका मामला शामिल नहीं था**।
- सर्वोच्च न्यायालय द्वारा इन कट-ऑफ तिथियों को रद्द करने के **नरिणय** के बावजूद, उनका दावा अनसुलझा ही रहा।
- वर्षों की कानूनी लड़ाई के बाद, [सशस्त्र बल न्यायाधिकरण \(AFT\)](#) ने आंशिक राहत प्रदान की तथा उसके बकाये को उसके दाखलि करने की तिथि से तीन वर्ष पूर्व तक सीमति कर दिया।
 - हालाँकि, पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय ने इस नरिणय को नरिस्त करते हुए कहा कि **वह वर्ष 2001 की नीति की प्रभावी तिथि से बकाया राशि प्राप्त करने का अधिकार रखती है**।